11

प्राथमिक स्तर के बच्चों में पढ़ने की प्रवृत्ति
एक दृष्टिकोण

पूजा जैन*

पढ़ने की आदत एक ऐसी नैसर्गिक प्रक्रिया है जिसकी जड़ बचपन से मज़बूत होनी चाहिए। पढ़ने के कई उद्देश्य होते हैं — समझना, समझाना, जानना, सीखना, कल्पना का निर्माण करना, अन्वेषण करना, नवाचार करना, विस्तार करना और ज्ञान प्राप्त कर, उसका क्रियान्वयन करना आदि। प्राथमिक स्तर पर बच्चों में पढ़ने की आदत को बढ़ाने के लिए माता-पिता, शिक्षकों और पुस्तकालय की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आज हम डिजिटल युग में अपने को सराबोर पाते हैं, आज कंप्यूटर एवं इंटरनेट के बिना अधिगम की कल्पना करना असंभव-सा है। अपने आस-पास जब कई बच्चों को हम पुस्तकों के अध्ययन से दूर उदासीन पाते हैं, तो यह अनिश्चित कई भावी विसंगतियों को आमंत्रित करता है। इस डिजिटल युग में कैसे बच्चों को पढ़ने की तरफ अग्रसर करें, यह एक बड़ी चुनौती है। प्रस्तुत लेख में पढ़ने के महत्व को समझते हुए प्राथमिक स्तर के बच्चों में पढ़ने की जिज्ञासा को किस प्रकार विकसित किया जाए या क्या उपाय किए जाएँ, जिससे बच्चे रुचिपूर्ण पढ़ने के कौशल में पारंगतता प्राप्त कर सकें, पर प्रकाश डाला गया है।

‘आदत’ शब्द का अर्थ नियमित रूप से किसी चीज़ का अभ्यास करने की प्रवृत्ति से है, जो लगातार दोहराव से प्राप्त होती है। प्रवृत्ति, रुचि आदि की विलक्षणता के कारण उत्पन्न होने वाली वह स्थिति, जो बार-बार करते रहने पर अथवा किसी बात के अभ्यस्त होने पर प्रकृति या स्वभाव का अंग बन जाती है, उसे आदत कहते हैं।

शिक्षा की यात्रा स्कूल से शुरू होती है और पढ़ने के कौशल की यात्रा घर से शुरू होकर स्कूल की मदद से आगे बढ़ती है। यह कौशल आमतौर पर विभिन्न स्तरों पर बढ़ाया जाता है, जैसे माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी व दोस्तों के द्वारा घर पर, शिक्षक एवं पुस्तकालय के साथ विद्यालय में आदि। शिक्षक, पुस्तकालय एवं अभिभावक बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पढ़ने का कौशल बचपन से शुरू होता है और उम्रभर चुनौतीपूर्ण जीवन में अहम भूमिका निभाता है।

**सहायक पुस्तकालय अध्यक्ष*, पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली 110016

नियमित और व्यवस्थित पढ़ने से शब्दावली में सुधार, बेहतर समझ, विषय के बारे में जानकारी, तथ्य और सुझाव के बीच विचार प्रकट करने की क्षमता, आत्मविश्वास में वृद्धि होती है, जिससे व्यक्ति सामाजिक और राजनीतिक जीवन में प्रभावी भागीदारी निभा पाते हैं।

जो छात्र नियमित लगन से पढ़ते हैं, वे अधिक आत्मविश्वास के साथ परीक्षा का सामना करते हैं और अच्छा प्रदर्शन करते हैं। किसी भी शारीरिक गतिविधि की तरह छात्रों का नियमित पढ़ना उनकी सहनशक्ति का निर्माण करता है। जो छात्र अच्छे पाठक हैं, वे बातचीत या अन्य लेखन में जुड़ाव, गठजोड़ और उद्धरण कर पाते हैं। यह उनके आत्मसम्मान को बढ़ाता है और उन्हें स्वतंत्रता के साथ किसी भी कार्य को करने के लिए प्रेरित करता है। अच्छे-बुरे में फ़र्क करना सिखाता है साथ ही जीवन को समृद्ध और सार्थक बनाने में मदद करता है। पढ़ना, शिक्षा के लिए बुनियादी उपकरण है, जो ज्ञान की परिधि को बढ़ाता है।

दुर्भाग्य से, पठन ने अपना महत्व खो दिया है, क्योंकि सभी लोग इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और विशेष रूप से टेलीविज़न, इंटरनेट, मोबाइल गेम की तरफ बहुत आकर्षित हो रहे हैं। आज यही स्कूल के छात्रों में सबसे ज़्यादा उपेक्षित है, शैक्षिक-सामग्री में पढ़ने की आदत में कमी पाई जा रही है, और इलेक्ट्रॉनिक गजेट्स को इसका एक महत्वपूर्ण कारण माना जा रहा है।

पुस्तकालय की भूमिका

स्कूली शिक्षा में पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण घटक है, जो छात्रों और शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की सूचना और सेवाएँ प्रदान करके शिक्षण और शिक्षण गतिविधियों में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा के गुणात्मक स्तर को बढ़ाने के लिए एक सुसज्जित एवं व्यवस्थित पुस्तकालय की आवश्यकता होती है। विषय सामग्री को समझाने में पुस्तकालय का अभूतपूर्व योगदान होता है।

विद्यालय के पुस्तकालय में विशेषत: दो प्रकार के पाठक होते हैं — शिक्षक और विद्यार्थी। दोनों की जिज्ञासाएँ अलग-अलग हैं, परंतु दोनों का उद्देश्य एक है — शिक्षा। इस डिजिटल युग में प्राथमिक स्तर के छात्रों के बीच पढ़ने की रुचि को बढ़ावा देने की ज़िम्मेदारी एवं चुनौतियाँ शिक्षकों, पुस्तकालयाध्यक्षों, अभिभावकों पर निरंतर रूप से बढ़ रही हैं। समाज में ऐसे बच्चों का प्रतिशत अधिक है, जोकि पढ़ने की इच्छा से विमुख हो रहे हैं।

स्रोत — केंद्रीय विद्यालय, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली 110016

पुस्तकालय में पुस्तकालयाध्यक्ष या पुस्तकों की देख-रेख करने वालों की अहम भूमिका होती है, जो शिक्षकों को सीखने-सिखाने में निम्नलिखित सूचना के साथ योगदान दे सकते हैं।

- विभिन विषयों से संबंधित उपलब्ध पुस्तकों के बारे में जानकारी देना।
- शिक्षकों के सुझाव से नवीनतम पुस्तकें खरीद कर पुस्तकालय में रखना।
- पुस्तकालय में खरीदी गई नई पुस्तकों की जानकारी देना।
- हर विषय में पठन सामग्री तैयार करके देना।
- डिजिटल युग में प्रिंट/नॉनप्रिंट मैटीरियल उपलब्ध कराना इत्यादि।

शिक्षक की भूमिका

शिक्षकों की बच्चों के हर स्तर के विकास में विशेष भूमिका होती है। वे बच्चों में विभिन्न क्रियाकलाप के साथ पढ़ने की रुचि जागृत करते हैं एवं विषय से जुड़े संदर्भ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। शिक्षक एवं पुस्तकालयाध्यक्ष पुस्तक और पाठक के बीच सामंजस्य बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। साथ ही विभिन्न गतिविधियों (विभिन्न प्रतियोगिताएँ, पुस्तक समीक्षा आदि) के माध्यम से बच्चों में पढ़ने की प्रवृत्ति का विस्तार करते हैं।

पुस्तकालय को अपने लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षकों के सहयोग की आवश्यक होती है। इसलिए शिक्षकों से यह आशा की जाती है कि वे छात्रों को निम्न जानकारी दें—

- कक्षा में पढ़ाए गए विषय पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त जिन अन्य पुस्तकों में मिल सकते हैं, उनकी जानकारी दें।
- समांतर अध्ययन हेतु पूरक सामग्री की जानकारी दें।
- शोधकार, प्रोजेक्ट, गृह कार्य को पूरा करने हेतु आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की जानकारी दें।
- पुस्तकालय जाने व नई पुस्तक पढ़ने के लिए छात्रों को प्रेरित करें।

इस तरह से शिक्षकगण पुस्तकालय के सच्चे सहयोगी बनकर छात्रों को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं।

अभिभाविकों की भूमिका

प्राथमिक स्तर के बच्चों में पढ़ने की आदत को बढ़ाने में माता-पिता प्राथमिक संपर्क के रूप में काम करते

स्रोत — केंद्रीय विद्यालय, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली 110016

हैं और ज़्यादातर पढ़ने की गति के दृष्टिकोण और प्रवृत्ति के स्रोत बनते हैं।

बच्चे अपने माता-पिता से प्रोत्साहन तब प्राप्त करते हैं, जब अभिभावक बच्चों के साथ पढ़ते हैं। भारत और विदेश में अधिकांश अध्ययनों से संकेत मिलता है कि बच्चों में पढ़ने की आदतें, पढ़ने की सामग्री एवं पर्यावरण की उपलब्धता है या नहीं और पढ़ने में बच्चे की व्यक्तिगत रुचि तथा उनके माता-पिता शिक्षित हैं? आदि इन्हीं बातों पर निर्भर करती है।

प्राथमिक स्तर के बच्चे ज़्यादा समय माता-पिता के साथ ही व्यतीत करते हैं। अत: अभिभावकों के लिए बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने के सुझाव निम्नलिखित हैं—

1. **रोल मॉडल**—ऐसा माना जाता है कि अभिभावक ही बच्चों के लिए पहला रोल मॉडल होते हैं। अभिभावकों को उनके सामने नियमित रूप से पढ़ना चाहिए। वे बच्चों को प्रेरित करें। यह उतनी ही महत्वपूर्ण गतिविधि है, जैसे—स्कूल जाना, होमवर्क करना, दोस्तों के साथ खेलना आदि। वर्तमान पीढ़ी में आप बच्चे को केवल तब पढ़ने का निर्देश दे सकते हैं, जब आप स्वयं भी इस अभ्यास के अनुयायी हों।
2. **पड़ोस पुस्तकालय की सदस्यता**—अभिभावकों का कर्तव्य है कि वे उन्हें पास के सार्वजनिक पुस्तकालय का सदस्य बनाएँ। वे कम से कम माह में एक-दो बार बच्चों को वहाँ ले जाएँ, जिससे बच्चे समझ सकें कि पुस्तकालय ज्ञान का भंडार है। यहाँ एक साथ सभी क्षेत्रों में वर्तमान विकास की जानकारी और समाचारों के बारे में भी अच्छी जानकारी मिलती है। यह (पुस्तकालय) स्कूल में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
3. **बच्चों की रुचि के अनुसार किताबें खरीदें**—अभिभावक अपनी आय में से मासिक खर्च के लिए अलग-अलग शीर्ष के तहत योजना बनाते हैं, उसी प्रकार सभी अभिभावकों को पुस्तकों की खरीद के लिए अलग से बजट रखना चाहिए। इसका सीधा असर बच्चों के मनोविज्ञान पर पड़ेगा कि किताबें पढ़ना इतना महत्वपूर्ण है कि इसके लिए अलग से बजट रखा जा रहा है। अगर बच्चे कभी महँगी किताबों की माँग करते हैं, तो किताबों में रुचि रखने के लिए उनकी माँग को पूरा किया जा सकता है।
4. **पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेलों का दौरा**—बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले/विश्व पुस्तक मेले में जाने की योजना बनानी चाहिए। पुस्तक प्रदर्शनी से बच्चों को अपनी पसंद की हज़ारों पुस्तकों से आत्मसात् होने का मौका मिलता है। वे अपनी रुचि के अनुसार नवीनतम पुस्तकों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
5. **घर में पुस्तकालय**—जिस प्रकार हम घर में मंदिर के लिए स्थान रखते हैं, ठीक उसी प्रकार घर में एक छोटी-सी लाइब्रेरी की जगह भी तय होनी चाहिए। पुस्तकों के संग्रह से बच्चों को अपने दोस्तों के बीच पुस्तकों के आदान-प्रदान करने में मदद मिलती है तथा पुस्तक संग्रह से बच्चे की पसंद की सभी किताबें एक जगह व्यवस्थित हो जाती हैं।

6. **यात्रा के समय में पढ़ना** — पढ़ने की आदत को बढ़ाने के लिए, यात्रा के दौरान अपने साथ हमेशा किताबें, पत्रिकाएँ आदि रखना एक अच्छा अभ्यास है। यह बच्चों के मन में इस धारणा को बढ़ावा देता है कि आराम के समय में पढ़ने से आनंद मिलता है।
7. **छुट्टी के दौरान बच्चों को पढ़ने के कार्यक्रम में दाखिला** — आम दिनचर्या में बच्चे स्कूल होमवर्क, प्रोजेक्ट वर्क और अन्य गतिविधियों में व्यस्त रहते हैं। उनके पास, छुट्टियों के दौरान पर्याप्त समय होता है। इस अवधि का उपयोग बच्चों के पढ़ने के कार्यक्रम में नामांकन से हो सकता है। इस कार्यक्रम में कहानी लेखन, चरित्र भूमिका निभाना, कहानी को पूरा करना, साधारण पढ़ना, पुस्तकालय की यात्रा, कथा साहित्य, कॉमिक्स, आत्मकथाएँ आदि शामिल हैं। इस तरह के कार्यक्रम वास्तव में शब्दावली, लेखन और पढ़ने के कौशल और भाषा दक्षता को बढ़ाते हैं। आजकल कुछ विद्यालय इस तरह के कार्यक्रम का आयोजन छुट्टियों के दौरान शुरू कर रहे हैं।

प्राथमिक स्तर के बच्चे पढ़ने के प्रति जब अनिच्छुक व्यवहार करते हैं तब पठन को बेहतर बनाने के सुझाव निम्नलिखित हैं—

1. **एक-एक पंक्ति या एक-एक पैराग्राफ़ पढ़ना** — जब बच्चा वाक्यों को पढ़ने में सक्षम हो जाता है, तो बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करने हेतु एक-एक वाक्य पढ़ने के सूत्र का अभ्यास करें। कुछ बच्चे निश्चित रूप से पढ़ने के इस तरीके का आनंद लेते हैं क्योंकि वे माता-पिता की भागीदारी को महसूस करते हैं और इसे वे एक खेल की तरह मानते हैं।
2. **इंटरैक्टिव पुस्तकों का उपयोग** — वर्तमान परिदृश्य में इंटरैक्टिव पुस्तकों के लिए अधिक विकल्प उपलब्ध हैं। इंटरैक्टिव किताबें मँहगी हैं, लेकिन वास्तव में इसमें बच्चों की तरफ से भागीदारी होती है।
3. **पढ़ें और नाट्य करें** — अगर बच्चे सामूहिक रूप से पढ़ें तो वे सब मिलकर विभिन्न पात्रों का नाटक कर सकते हैं। यदि कहानी में केवल दो पात्र हैं, तो अभिभावक भी उस नाटक की गतिविधि का हिस्सा बन सकते हैं। यह गतिविधि स्कूल के माहौल में अधिक लागू होती है।
4. **कहानी की कल्पना** — कुछ बच्चों को कहानियाँ बनाना बहुत पसंद होता है इसलिए कहानी की कल्पना करना एवं उनके साथ सोते समय चर्चा करना, एक अच्छा विकल्प है।
5. **यूट्यूब** — आई.सी.टी. के आगमन के साथ, बच्चे ज़्यादातर ऑडियो-वीडियो सामग्री की ओर आकर्षित होते हैं। प्लेग्रुप उम्र के लिए यह एक अच्छा विकल्प है। बड़े बच्चों के लिए भी अच्छी कहानियाँ उपलब्ध हैं क्योंकि चित्रों के नीचे आने वाले कैप्शन से बच्चों को पढ़ने की प्रेरणा मिलती है और आनंद भी आता है।
6. **शिक्षाप्रद खेल** — बाज़ार में बहुत सारे खेल उपलब्ध हैं, जो शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्धक हैं। इस प्रकार के खेल नई चीज़ों और ज्ञान को सीखने में एकाग्रता और रुचि को बढ़ाते हैं।
7. **डायरी लिखने की आदत** — इससे मानसिक लेखन, समझ व शब्द-संपदा का विस्तार होता है।

बच्चा अनजाने में ही पढ़ने, लिखने और समझने का कौशल सीख जाता है।

डिजिटल युग में यह शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों के लिए भी एक बड़ी चुनौती है कि वे निम्नलिखित कारणों के बावजूद बच्चों में पढ़ने की रुचि पैदा करें—

- टेलीविज़न
- इंटरनेट
- घर में इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स
- ओपन एक्सेस सॉफ़्टवेयर्स/गेम्स की उपलब्धता
- मोबाइल फ़ोन
- कामकाजी माता-पिता

निष्कर्ष

अत: कहा जा सकता है कि पढ़ना-सीखना एक आजीवन प्रक्रिया है, जो कि व्यक्ति के हर स्तर के विकास हेतु आवश्यक है। प्राथमिक स्तर के बच्चों के सर्वांगीण विकास में अभिभावकों और शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अत: दोनों को मिलकर इस उद्देश्य के लिए सार्थक प्रयास करने चाहिए। प्राथमिक शिक्षा किसी भी देश के शिक्षा तंत्र के सोपान की आधारशिला है। देश के सभी अभिभावकों और शिक्षकों का यह दायित्व होना चाहिए कि वे प्राथमिक स्तर से पढ़ने की आदत पर विशेष ध्यान केंद्रित करें, जिससे हमारे देश में शिक्षा की नींव एवं बुनियादी शिक्षा मज़बूत हो सकें व देश का भविष्य उज्ज्वल हो। पढ़ने में निरंतर रुचि के लिए पठन सामग्री का रुचिकर एवं सुलभ होना भी ज़रूरी है, तभी सरकार भी निरंतर विद्यालयों की पठन सामग्री पर विशेष ध्यान दे रही है। अत: कहा जा सकता है कि अभिभावक, शिक्षक एवं पुस्तकालयाध्यक्ष बच्चे के पढ़ने की प्रवृत्ति को धीरे-धीरे परखकर, उच्चतम विकास के सोपानों (पढ़ने) को प्रासंगिक बनाते हैं, जिससे बच्चे का पठन-पाठन सुलभ, सुगम्य एवं बोधगम्य बनता है।

संदर्भ

कुम्बर, रश्मि टी. 2017. *डेवलपिंग रीडिंग एज़ ए वर्च्यु इन इंडियन स्कूल लाइब्रेरीज़ — ए केस स्टडी ऑफ़ ज़ाइडस स्कूल फ़ॉर एक्सीलेन्स*. पृ. 55–58. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

जैन, प्रीति. 2017. *प्राथमिक विद्यालयों में पुस्तकालय उपयोगिता तथा आधुनिक सूचना सेवाएँ*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

सिंह, राधानन्द. 2017. *शिक्षा के गुणात्मक सुधार में पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका और उसका दायित्व*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

http://www.prokerala.com/kids/activities/teach-children-to-read.php